अशौचदशामें संध्योपासनका विचार

जननाशौच अथवा मरणाशौचमें मन्त्रका उच्चारण किये बिना ही प्राणायाम करना चाहिये तथा मार्जन-मन्त्रोंका मन-ही-मन उच्चारण करते हुए मार्जन कर लेना चाहिये। गायत्रीका स्पष्ट उच्चारण करके सूर्यको अर्घ्य दे। मार्जन करे या न करे, परंतु उपस्थान तो नहीं ही करना चाहिये। मानसिक संध्याका भी।स्वरूप यही है। यह आरम्भसे अर्घ्यके पहलेतक ही की जाती है, इसमें कुश और जलका उपयोग नहीं होता। गायत्री-मन्त्रका उच्चारण करके जो अर्घ्य देनेकी बात कही गयी है, उसमें जलका उपयोग आवश्यक है अर्थात् अशौचावस्थामें भी सूर्यको जलसे अर्घ्य देना ही चाहिये।

१-सूतके मृतके वापि प्राणायाममन्त्रकम्।

तथा मार्जनमन्त्रांस्तु मनसोच्चार्य मार्जयेत्॥

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष:9044016661

गायत्रीं सम्यगुच्चार्य सूर्यायायं निवेदयेत्।
मार्जनं तु न वा कार्यमुपस्थानं न चैव हि।
(आह्निकसूत्रावली)

२.अर्घ्यान्ता मानसी संध्या कुशवारिविवर्जिता।
(निर्णयसिन्धु)

३-सूतके तु सावित्र्याञ्जलंप्रक्षिप्य प्रदक्षिणं कृत्वा सूर्य ध्यायन्नमस्कुर्यात्।
(मिताक्षरामें पैठीनसिका मत)

जलके अभावमें धूलिसे अर्घ्य करना चाहिये। जलके अभावमें या बहुत लम्बी यात्राके समय अथवा कैदमें पड़ जानेपर या अशौच-अवस्थामें दोनों कालोंकी संध्याके समय धूलिसे भी अर्घ्य देना बताया गया है। संध्याकालमें आपत्तिग्रस्त या अशौचयुक्त पुरुषको भी कम-से-कम दस-दस बार गायत्री-मन्त्रका जप करना